

डॉ. करेग कीनर \AE अधनियिम \AE व्याख्यान \AE अधनियिम 3-5

© 2024 करेग कीनर और टेड हलिडेब्रांट

यह एकट्स की पुस्तक पर अपने शक्तिषण में डॉ. करेग कीनर हैं। यह अधनियिम अध्याय तीन से पांच परे सत्र 8 है।

परचिय में मैंने ऐतहासकि मुद्दों पर बात करने में काफी समय बतियाया।

परेरतियों के काम अध्याय एक और दो में, मुझे उपदेश देना शुरू कर दिया गया। इसलिए, मुझे ये सभी चीजें करना पसंद है। लेकिन परेरतियों के काम की अधिकांश पुस्तकों में, मैं विशेष रूप से, यद्यपि विशेष रूप से नहीं, आपको कुछ प्राचीन पृष्ठभूमि देने पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करने जा रहा हूँ जो आपको पाठ को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है।

और इसका मुख्य कारण यह है कि यह वह हिस्सा है जो आपको अपने आप नहीं मिलेगा। मैं मान रहा हूँ कि यदि आप इस वीडियो को देखने के लिए पर्याप्त रूप से प्रतबिद्ध हैं, तो आप इतने भी प्रतबिद्ध हैं कि आप पहले से ही अधनियिमों की पुस्तक पढ़ चुके हैं। लेकिन मैं आपकी सराहना भी करना चाहता हूँ क्योंकि अगर आप वीडियो में यहां तक आ गए हैं, तो आप बहुत प्रतबिद्ध व्यक्ति हैं।

तो, अधनियिम अध्याय तीन यीशु के नाम पर उपचार से संबंधित है, श्लोक एक से 10 तक शुरू होता है। यह मूल रूप से हमें 243, 44, 46 और 47 में हमारे पास किया है, इसका एक उदाहरण देता है, जहां चांदी और सोने ने अपने संसाधनों को छोड़ दिया है, संकेत, और चमत्कार जैसे 243, 46, और 47 बार एक साथ प्रार्थना। और यह चमत्कार कसि ओर ले जाता है, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, संकेत अक्सर ऐसा करते हैं, यह एक उपदेश के अवसर की ओर ले जाता है।

तो, कुछ पृष्ठभूमि को देखते हुए, वे इस आदमी को मंदिर के द्वार पर, या मंदिर के द्वारों में से एक, गेट ब्यूटीफुल पर पाते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि विकिलांगों को इज्राइल के दरबार में जाने से रोके दिया गया था। वे महिलाओं की अदालत से आगे नहीं जा सकते।

यह सच है या नहीं, इसके कुछ सबूत हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि मंदिर के रखवाले उन चीजों पर कतिने कठोर थे। यदि ये वे लोग होते जिन्होंने मृत सागर स्क्रॉल लिखे होते, तो उन्हें नश्चित रूप से प्रतबिंधित कर दिया गया होता।

लेकिन किसी भी मामले में, यह भीख मांगने के लिए एक लाभदायक जगह थी क्योंकि लोग हमेशा गेट से आते-जाते थे। लोग मंदिर में प्रवेश करते समय पवित्र होना चाह रहे थे। यहूदी धर्म में बहुत उच्च कार्य नीतिके साथ-साथ उच्च दान नीति भी थी।

तो, यह समझा गया कि लोग एक तरह से शर्मिंदगी से नहीं गुजरेंगे। खैर, हाँ, इसे भीख मांगना शर्म की बात माना जाता था जब तक कि उन्हें वास्तव में ऐसा न करना पड़े। और लोग भीख मांगने वालों के प्रतबिहुत परोपकारी होते थे।

खैर, वह उनसे पैसे मांगता है। उनके पास पैसे नहीं हैं। लेकिन उनके पास जो कुछ है, वे उसे कुछ अधिक महत्वपूर्ण, पैसे से कहीं अधिक मूल्यवान कुछ देते हैं।

उन्होंने कहा, नाजरेथ के यीशु मसीह के नाम पर, उठो और चलो। अब, यीशु के नाम में, इसका क्या मतलब है? वभिन्न प्रस्ताव आए हैं, लेकिन सबसे संभावित प्रस्ताव जो प्रत्येक में से सर्वश्रेष्ठ को पकड़ता है वह संभवतः यीशु के अधिकृत एजेंट के रूप में है। वे यीशु के अधिकार पर कार्य कर रहे हैं।

वे यीशु के लिए कार्य कर रहे हैं। अधिनियम 1.1 कहता है कि पहला खंड उन सभी के बारे में था जो यीशु ने करना और सखिना शुरू किया था। अब, यह सामीवाद हो सकता है, जिसका मतलब बस वह सब कुछ है जो यीशु कर रहे थे और सखा रहे थे।

लेकिन ल्यूक के अन्यत्र उपयोग और अधिनियम 1.1 में इसकी स्थिति को देखते हुए, मेरा संदेह यह है कि संभवतः खंड 1 का अर्थ वही है जो यीशु ने करना और सखिना शुरू किया था। खंड 2 बताता है कि कैसे यीशु ने शिष्यों के माध्यम से कार्य करना और शिष्याई देना जारी रखा। तो यह प्रेरितों के कार्य नहीं है, जो वास्तव में वैसे भी एक बाद का शीर्षक था, लेकिन यीशु के कार्य उनके कुछ अनुयायियों के माध्यम से जारी है।

प्रेरितों के काम 9 में, यीशु तब कार्य कर रहा है जब पीटर चाहता है कि कोई व्यक्ति ठीक हो जाए। पतरस कहता है, ऐनयास, यीशु तुम्हें चंगा करता है। तो यह मान्यता है कि यह कार्य यीशु ही कर रहे हैं।

और यहाँ, पतरस अंततः इस आदमी को ठीक करने का श्रेय यीशु और यीशु के नाम को देने जा रहा है। इसीलिए अध्याय 3 और श्लोक 12 में, जब वे कह रहे हैं, भीड़ उन्हें देख रही है, पतरस कहता है, तुम हमें ऐसे क्यों देखते हो जैसे कि हमारी अपनी शक्तियाँ पवित्रता से, यह मनुष्य पूर्ण हो गया है? यह नासरत के यीशु के नाम से है, जैसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया था, कि यीशु ने इसे मनुष्य को पूर्ण बनाया है। यदि ईश्वर हमारे माध्यम से कार्य करता है, तो आइए उसी इसका श्रेय दें।

यदि हम इसका श्रेय स्वयं लेते हैं और स्वयं की ओर देखते हैं, तो संभावना है कि हम उन चीजों को करने में सक्षम नहीं रहेंगे क्योंकि यह हमसे नहीं आती है। यह उससे आता है। अब हम पीटर के संदेश पर कुछ नोट्स देखने जा रहे हैं।

पतरस ने उन्हें यीशु का नाम उपदेश दिया, जैसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया। कॉर्पोरेट अपराध की बात करते हुए, उनके अधिकांश श्रोता वास्तव में वहाँ नहीं थे, लेकिन यरुशलेम की भीड़ वही थी जो ल्यूक अध्याय 22 में यीशु की फांसी के लिए चलिला रही थी। इसलिए पीटर का संदेश, वह बताता है कि कैसे यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, लेकिन भगवान ने अपने सेवक की महिमा की है यीशु, अध्याय 3 और पद 13।

और नौकर को महिमामंडति करने की वह भाषा ग्रीक अनुवाद में यशायाह 52.13 को प्रतधिवृत्ति करती है, जहाँ नौकर को ऊँचा और ऊँचा किया गया था। उनका महिमामंडन किया गया। जॉन के सुसमाचार में, क्रूस के संदर्भ में इसका कई बार उपयोग किया गया है।

यहाँ, यह विशेष रूप से उच्चाटन पर लागू होता प्रतीत होता है। और यह भी, पत्रस यीशु को पवित्र और धर्मी भी कहता है। खैर, अगर वह यशायाह 52:13 के संदर्भ में सोच रहा है, तो यशायाह 53:11 में, यह धर्मी सेवक की बात करता है।

उसे अपने पापों के लिए दोषी नहीं ठहराया गया था, भले ही यशायाह 40 में पहले इस्राएल को अपने पापों के लिए दोगुना भुगतान मालि रहा था। अध्याय 3 और श्लोक 15 में, पत्रस पुरातत्ववर्तियों की बात करता है। यह भाषा अक्सर नायकों, अग्रदूतों और शहरों के संस्थापकों के लिए उपयोग की जाती थी।

यीशु नश्चिती रूप से आंदोलन के संस्थापक हैं, लेकिन वह एक अग्रणी की तरह भी हैं जिन्होंने अपने पीछे चलने वालों के लिए रास्ता काटा, जिन्होंने अपने पीछे चलने वालों के लिए रास्ता बनाया, वह मृतकों में से जीवित होने वाले पहले व्यक्ति हैं। लेकिन इस शब्द का मतलब इनमें से किसी भी प्रकार की चीज़ से हो सकता है। और यहाँ, यह संभवतः उनमें से किसी प्रकार का संयोजन है।

इसीलिए आप इसे अलग-अलग अनुवादों में इतने अलग-अलग तरीकों से अनुवादित देखते हैं। इसका उपयोग वास्तव में सेप्टुआजेंट में कुलों के नेताओं के लिए किया गया था। तो, यह कोई ऐसा व्यक्ति है जो नेता है और कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपने अनुयायियों के लिए एक नया रास्ता बना रहा है।

पीटर 5:31 में उसी भाषा का उपयोग करता है। इसका प्रयोग इब्रानियों 2:10 और 12:2 की पुस्तक में भी कुछ बार किया गया है। यहाँ 3:14 में वडिम्बना है। उन्होंने एक हत्यारे को स्वीकार कर लिया जब उन्होंने कहा, हम बरअब्बा को चाहते हैं, इस मनुष्य को नहीं। उन्होंने एक हत्यारे को स्वीकार कर लिया और फिर उन्होंने जीवन के लेखक, संस्थापक, जीवन के प्रणेता को मार डाला। यही वडिम्बना है।

और फिर इससे भी बड़ी वडिम्बना, वह मरा नहीं। 3:17 में पत्रस कहता है, मैं जानता हूँ कि अज्ञानता के कारण तुं ने ऐसा किया। खैर, अज्ञानता प्राचीन कानून और प्राचीन विचार में दोष को खत्म नहीं करती, बल्कि उसे कम कर देती है।

और इसलिए, वह कह रहा है, मैं जानता हूँ कि तुम नहीं जानते थे कि तुम क्या कर रहे थे, जैसा कि यीशु ल्यूक 23 में क्रूस पर कहते हैं, पिता, उन्हें माफ कर दो। वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। साथ ही, पत्रस यह भी बताता है कि कैसे वादा किया गया मसीहाई पुनरुद्धार आया है।

कुछ ऐसा जिसके बारे में सभी भविष्यवक्ताओं ने बात की थी। खैर, 3.18 में, जो भाषा वहाँ इसतेमाल की गई है, बाद में यहूदी शक्तिषकों ने कहा कि भविष्यवक्ताओं के सभी संदेश इस विषय या उस विषय से संबंधित हैं। भविष्यवक्ताओं ने जिन विषयों पर बात की उनमें से एक था मसीहाई युग या यरूशलेम की पुनर्स्थापना।

और पीटर उनसे पुनर्स्थापना के इस युग के बारे में बात करने वाला है। 3.19 में, वह उन सभी चीजों की बहाली की बात करता है जिनका वादा भगवान ने किया था। खैर, उन सभी चीजों की बहाली क्या है जिनका वादा परमेश्वर ने किया था? ईश्वर ने एक नई सृष्टि का वादा किया था, लेकिन उन्होंने भविष्यवक्ताओं में यह भी कहा था कि इससे पहले पश्चाताप होगा।

इस्राएल का पश्चाताप इससे पहले होगा। पीटर इसी की मांग कर रहा है। और पुनर्स्थापन का

एक काल आएगा जब इस्राएल परमेश्वर की ओर मुड़ेगा।

होशे 14 :1-7, जोएल 2:18-3:1, यह एक अंग्रेजी अनुवाद है। मुझे लगता है, यह व्यवस्थाविवरण 4.30-31 में भी नहित है। यहूदी शक्तिषकों ने माना कि इजराइल द्वारा पश्चाताप बहाली से पहले होगा। कुछ लोगों ने सोचा, ठीक है, हम पश्चाताप करके बहाली के समय को तेज कर सकते हैं।

कभी-कभी बाद में रब्बी कहते थे कि क्या सारा इसराइल एक ही दुनि में सबूत का दुनि एक साथ मनाएगा, या क्या पूरा इसराइल ऐसा करेगा या पूरा इसराइल वैसा करेगा। लेकिन अंततः; यदि संपूर्ण इसराएल पश्चाताप करेगा, तो परमेश्वर पुनरस्थापना का समय लाएगा। अन्य रब्बियों ने कहा, ठीक है, तुम्हें पता है, समय पूर्वनिर्धारित है।

हम इसमें जल्दबाजी नहीं कर सकते। लेकिन फरि भी, यह दोनों हो सकते हैं। इसे पुनरस्थापना और पश्चाताप के समय से जोड़ा जा सकता है।

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने पुनरस्थापना का समय पूर्वनिर्धारित किया था, लेकिन उसने इसे इजराइल के पश्चाताप के साथ भी पूर्वनिर्धारित किया था। जो भी मामला हो, यहाँ, पतरस उन्हें पश्चाताप करने के लिए कहता है और कहता है कि पुनरस्थापना का समय आएगा। खैर, वह क्या था जिसे पुनरस्थापित किया जाने वाला था? सभी चौजों की बहाली का समय।

कुछ अन्यजातियों ने चक्रों के ब्रह्मांड के बारे में बात की, विशेषकर स्टोइकस ने। उनका मानना था कि ब्रह्मांड समय-समय पर आग से नष्ट हो जाता है और एक नए ब्रह्मांड के रूप में पुनर्जन्म लेता है। और वह केवल परम देवता ही रहेगा।

बाकी सब कुछ आग में घुलने वाला था और फरि दोबारा दोहराया जाने वाला था। लेकिन यह वास्तव में शाश्वत नहीं था। इसे फरि से शुरू किया जा रहा था।

यह यहाँ जो देख रहा है उससे थोड़ा अलग है। यहाँ, पीटर यहूदी श्रोताओं से बात कर रहे हैं। पुनरस्थापना की यहूदी अपेक्षा में पृथ्वी पर सृजन, शांति और समृद्धि की बहाली शामिल थी, यशायाह अध्याय 11, शेर और मेमने के साथ।

और साथ ही, एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी, यशायाह 65:17। इसके अलावा, एक नया यरूशलेम होगा, यशायाह 65, छंद 18 और 19, और 66, 8 से 11। लेकिन अंततः; शायद यहाँ प्रारंभिक विचार इस तरह से संबंधित है कि पुनरस्थापना शब्द या पुनरस्थापना के लिए संबंधित शब्द का उपयोग पहले ही किया जा चुका है अधिनियमों की पुस्तक में।

प्रेरितों के काम अध्याय 1 और पद 7 में, याद रखें कि शिष्यों ने यीशु से पूछा था, क्या यही वह समय है जब आप इसराएल के राज्य को पुनरस्थापित करने जा रहे हैं? खैर, शिष्यों को अब भी इसकी परवाह है। स्वाभाविक रूप से, मेरा मतलब है, वे 12 सहिसनों पर बैठकर इजराइल की 12 जनजातियों का नेयाय करेंगे, है ना? इसलिए यह उनके लिए महत्वपूर्ण है और यह उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण है जिन्हें वे उपदेश दे रहे हैं। परमेश्वर के लोगों की पुनरस्थापना पुराने नियम में इसराएली भविष्यवक्ताओं का एक केंद्रीय संदेश था।

खैर, वह उन्हें पश्चाताप करने के लिए बुला रहा है ताकि ताजगी का वह समय आ सके जिसका वादा भविष्यवक्ताओं ने किया था। यहाँ तक कि प्रेरितों के काम अध्याय 28 से भी, इसराएल समग्र रूप से

नहीं बदला है। कभी-कभी हम सोचते हैं कि ऐसा लगता है कि कोई भी यहूदी वहां नहीं आया, लेकिन यह सच नहीं है।

अधिनियमों की पूरी पुस्तक में, कई यहूदी लोग बदल गए, लेकिन यह समग्र रूप से यहूदी लोग नहीं थे। इसलिए, यह वह नहीं था जो बहोली का वादा किया हुआ समय लाएगा। हम रोमियों अध्याय 11 में पॉल को ऐसा ही कुछ कहते हुए देखते हैं।

वास्तव में, पॉल का मानना था कि अन्यजातियों के लिए उसका मंत्रालय वास्तव में ईश्वरीय योजना का हिस्सा था क्योंकि यिशायाह ने अन्यजातियों को लाने के बारे में बात की थी। और जब अन्यजात इजराएल के परमेश्वर की ओर मुड़े, तो यह यीशु में विश्वास के माध्यम से आ रहा है। इजराइल को इसे देखना चाहिए और कहना चाहिए, वाह, यीशु को वादा किया गया मसीहा होना चाहिए क्योंकि देखो, यहां तक कि अन्यजात भी अब एक सच्चे ईश्वर की ओर मुड़ रहे हैं।

और पॉल का मानना था कि अपने लोगों को ईर्ष्या के लिए उकसाने से, यह पहचानने के लिए कि यह यीशु के माध्यम से है कि ये गैर-यहूदी आ रहे हैं, कि उसके लोग मसीहा में विश्वास करने लगेंगे जब अन्यजातियों की पूर्णता पर्याप्त समय दिए जाने के बाद आएगी। सभी राष्ट्रों में अच्छी खबर चली गई थी, कि इजराइल इसे देखेगा और यहूदी लोग समग्र रूप से ईश्वर में विश्वास करेंगे। रोमियों 11.26 में पूरे इजराइल की भाषा को बचाया जाएगा वास्तव में यह हेब्रोन 10.1 में मशिना में आपके पास मौजूद भाषा के समान है, जहां बाद में रब्बियों ने इस बारे में बात की थी कि पूरे इजराइल को कैसे बचाया जाएगा और फिर अपवादों की सूची बनाई जाएगी। तो, दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है समग्र रूप से इजराइल, समग्र रूप से यहूदी लोग, मसीहा में विश्वास की ओर मुड़ना।

यह उस तरह से कार्यान्वयित नहीं हुआ जैसा तरह से पॉल ने कल्पना की थी, कम से कम बहुत जल्दी नहीं, क्योंकि अन्यजातियों, गैर-यहूदी ईसाइयों ने उस पर ध्यान नहीं दिया जो पॉल ने उस संदर्भ में अन्यजात ईसाइयों से भी कहा था। गिरि हुई शाखाओं को नीचे मत देखो। उनके वरिद्ध अपने आप को वैसा ही घमंड मत करो जैसा उन्होंने एक बार तुम्हारे वरिद्ध किया था।

लेकिन वास्तव में, अधिकांश इतिहास में, अन्यजात चर्च ने कहा, नहीं, हमने इजराइल का स्थान ले लिया है। और जहां परमेश्वर अब वास्तव में कार्य कर रहा है वह गैर-यहूदी चर्च में है। और परमेश्वर वास्तव में यहूदी लोगों की परवाह नहीं करता है।

और वह भी संतुलित नहीं था। और इसलिए, हाल के दिनों में, कई यहूदी लोग मसीहा में विश्वास करने लगे हैं। कुछ का अनुमान 100,000 है, कुछ का अनुमान उससे कई गुना अधिक है।

यह अभी भी दुनिया में यहूदी लोगों का बहुत छोटा हिस्सा है। शायद पहली, दूसरी या तीसरी शताब्दी के बाद से यह इतिहास में पहले से कहीं अधिक बड़ा है। लेकिन पहली शताब्दी में शायद यह अधिक प्रतर्णित था।

इसलिए, जब हम अवशेष के बारे में सोचते हैं, तो अवशेष के साथ समस्या यह नहीं है कि यह बहुत छोटा होना चाहिए। बचे हुए लोगों के साथ मुद्दा यह है कि ये समग्र रूप से यहूदी लोग नहीं हैं।

और इसलिए, कुछ चीजें जिनकी पॉल ने कल्पना की थी और पतरस जिनकी यहाँ आशा कर रहा था, वे अभी तक घटति नहीं हुई हैं।

लेकिन पीटर इसके लिए काम कर रहा था और इसके लिए काम करना अच्छी बात है। अधिनियमों का जोर सभी लोगों तक जाने वाली खुशखबरी पर है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि विरिसत को छोड़ दिया गया है या उन यहूदी लोगों में रुचि को भुला दिया गया है जिनसे यह संदेश शुरू हुआ था।

परमेश्वर के परेम का शुभ समाचार सभी लोगों के लिए है। और ईश्वर का वह परेम विशेष रूप से मसीह में व्यक्त होता है। खैर, वह कहता है कि परमेश्वर ने वादा किया था कि वह मूसा जैसा भविष्यवक्ता खड़ा करेगा।

और इसमें वह व्यवस्थाविवरण अध्याय 18 श्लोक 15 और 18 का हवाला दे रहा है। यह एक आशा थी जिसे न केवल यहूदी लोगों द्वारा मनाया जाता था। बाद में रूबियों ने एक छपि हुए मसीहा के बारे में भी बात की जो मूसा की तरह होगा, जो प्रकट होने से पहले छपि होगा।

लेकिन यह कुछ ऐसा था जिसे सामरी लोगों द्वारा भी मनाया जाता था। इसे मृत सागर सकरॉल में भी मनाया जाता है। तो, यह कुछ ऐसा था जिसे पर पीटर के समय में बहुत जोर दिया गया था।

वास्तव में कुछ लोग ऐसे थे जिन्होंने मूसा या जोशुआ के चमत्कारों की नकल करने की कोशिश की लेकिन ऐसा करने में असफल रहे। लेकिन लोग एक नए मूसा और यीशु की उम्मीद कर रहे थे जिन्होंने जंगल में 5,000 लोगों को खाना खिलाया था। अंततः यीशु ही वह परम भविष्यवक्ता था।

जब मैं परम पैगंबर कहता हूँ, तो कुछ लोग कहते हैं, अच्छा, क्या यीशु अंतमि पैगंबर थे? और आप जानते हैं, कुछ अन्य धर्म कहते हैं, नहीं, हमारे पास उसके बाद भी पैगंबर हैं। ऐसा नहीं है कि यीशु अंतमि पैगंबर हैं, बल्कि वे परम पैगंबर हैं। आप जानते हैं, अधिनियमों की पुस्तक में भविष्यवक्ता थे, लेकिन यीशु अंतमि भविष्यवक्ता हैं।

मूसा कहता है, तुम उस पर ध्यान दोगे। 3:24-26 में, पतरस श्लोक 24 में शमूएल से आगे की भविष्यवाणियों के बारे में बोलता है। भविष्यवक्ताओं ने यीशु की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणियाँ दीं।

अच्छा, इसका क्या मतलब है? खैर, उसने अभी-अभी मूसा की तरह भविष्यवक्ता होने की बात की है, और मूसा एक अस्वीकृत उद्धारकर्ता था। हमें इसके बारे में अधिनियम 7 में अधिक स्पष्ट रूप से पता चलता है जहाँ यह संबंध बनता हुआ प्रतीत होता है। साथ ही, हम देखते हैं कि जिन अंगुठों को परमेश्वर ने खड़ा किया, उन्हें ऊँचा उठाने से पहले आम तौर पर कैसे कष्ट सहना पड़ा।

तो, वहाँ एक पैटर्न है जिसे हम भविष्यवक्ताओं में देखते हैं। और हमारे पास उस धरमी पीड़ति के बारे में भी ग्रंथ है जिनमें से सबसे धरमी व्यक्त सिस्वोत्कृष्ट रूप से धरमी पीड़ति होगा। हमारे पास यशायाह 53 भी है जिसके बारे में हम पहले बात कर चुके हैं।

और अन्य मार्ग. इसी प्रकार, शमूएल के बाद से भविष्यवक्ताओं, यहूदी लोगों ने समझा कि उन्होंने मसीहाई युग की भविष्यवाणी की थी। हमारे पास पुराने नियम में ऐसे बहुत से ग्रंथ नहीं हैं जो दाऊद के शासक पुत्र के बारे में बात करते हैं।

मेरा मतलब है, जब मैं कहता हूँ कि आपके पास बहुत कुछ नहीं है, तो यह उतना नहीं है जितना आप यहां पीटर द्वारा कही गई बातों से उम्मीद कर सकते हैं। यदि आप विशेष रूप से और विशेष रूप से उन ग्रंथों की तलाश कर रहे हैं जो डेविड के शासक पुत्र के बारे में बात करते हैं। दाऊद के शासक पुत्र के बारे में उन ग्रंथों में से यह स्पष्ट है कि यह दाऊद का वंशज है, स्वयं दाऊद का नहीं।

उनमें से एक ऐसा है जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह दविय है। और यरिमयाह 23 में एक और जिसका अर्थ संभवतः यह है कि कम से कम यशायाह में पहले की भविष्यवाणी के साथ संयोजन में लिया गया है। लेकिन ये भविष्यवाणियां नए मूसा के बारे में हैं, जो कष्ट उठाएगा और फिर उसे ऊंचा किया जाएगा।

इसमें मसीहाई युग का वादा, पुनर्स्थापना का वादा, वे सभी चीजें शामिल हैं जिन्हें करने के लिए मसीहा आया था। और इसलिए, यह सबसे पहले उन लोगों को पेश किया जाता है जिनके पास मसीहा सबसे पहले आया था। वह कहते हैं, आप पैगम्बरों के बच्चे या उत्तराधिकारी हैं, जो इस बात पर विचार करते हुए काफी अच्छा है कि यीशु ने अपने कुछ वार्ताकारों को कैसे संबोधित किया।

और ल्यूक अध्याय 11 और श्लोक 47 में, आप जानते हैं, आप उन लोगों की संतान हैं जिन्होंने भविष्यवक्ताओं को मार डाला। और फिर, अधिनियम 7.52 में, स्टीफन इसे कैसे कहते हैं, कि पत्रसे बहुत दयालु है क्योंकि वह उन लोगों से बात कर रहा है जिन्होंने अज्ञानता में कार्य किया। और यह कार्पोरेट अपराधबोध है और वह उन्हें आगे बढ़ने का मौका दे रहा है।

और उनके कई नायक ऐसा करते हैं। वह अब्राहम के आशीर्वाद की बात करता है। खैर, इब्राहीम का यह आशीर्वाद जिसके बारे में वह उनके पास आने की बात करता है, इब्राहीम का यह आशीर्वाद, उत्पत्ति 12.3 के अनुसार, सभी लोगों के लिए भी एक आशीर्वाद था, राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद था।

लेकिन यह उनके माध्यम से आना था। और इसीलिए वह कहता है कि नौकर, जिसका उल्लेख उसने पहले ही 3:13 में किया है, पहले उनके लिए आशीर्वाद बनने के लिए भेजा गया था। और नसिंसें, सबसे पहले, ल्यूक गैर-यहूदी मशिन का संकेत दे रहा है जो बाद में आता है।

प्रेरितों के काम अध्याय 4 में, उन पर मंदिर के अधिकारियों द्वारा दोषारोपण किया गया है। खैर, मंदिर प्राधिकारियों द्वारा उन पर दोषारोपण क्यों किया जा रहा है? क्योंकि अध्याय 4 और श्लोक 2 में कहा गया है कि वे यीशु को मृतकों में से पुनरुत्थान का उपदेश दे रहे हैं। फरीसियों ने पुनरुत्थान के बारे में बात की।

वे और सदूकियों पुनरुत्थान के बारे में दृढ़ता से असहमत थे। हो सकता है कि इससे सदूकियों को परेशानी हुई हो, लेकिन वास्तव में इससे उन्हें कोई खतरा नहीं था। लेकिन यीशु में पुनरुत्थान का उपदेश अलग था क्योंकि यह केवल भविष्य के लिए एक सैद्धांतिक आशा नहीं थी।

लेकिन यह अनुभवजन्य साक्ष्य था कि वह भवषिय पहले ही इतिहास में टूट चुका था। समय आ गया था और परमेश्वर अपने लोगों से अपनी मार्गें रख रहा था। और उसके लोगों के जो अगुवे नाजायज़ थे, वे अपने पद से बेदखल होनेवाले थे।

परैरति, जो बारह सहिसनों पर बैठे होंगे, बारह जनजातियों का न्याय करेंगे, नए नेता बनने जा रहे थे। और सदकी सुपष्टतःइससे प्रसनन नहीं थे। सदकियों ने मंदिर के पदानुक्रम और अधिकांश नैवासी पुरोहित वर्ग को नियंत्रित किया।

इसमें कहा गया है कि मंदिर रक्षक का कप्तान आया। मंदिर रक्षक एक स्थानीय पुलिस बल था जिसे लेवियों से बना रोमनों द्वारा अनुमति दी गई थी। खैर, हम कहेंगे, वे दोपहर करीब तीन बजे प्रार्थना के लिए आये थे।

तो, सूर्यास्त करीब आ रहा होगा और इसीलिए उन्हें उन्हें अंदर रखना होगा, उन्हें उन्हें रात भर रोकना होगा। वे नहीं कर सकते, शाम होने वाली है और लोगों को काम करना बंद कर देना चाहिए। और वे रात की बैठक नहीं बुलाने जा रहे हैं जैसा कि उन्होंने यीशु के साथ आपातकालीन बैठक के दौरान किया था।

और इन महायाजकों, अन्ना और कैफा के नामों के बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं। अन्नास जोसेफ कैफा के ससुर हैं। अन्नास महायाजक थे।

वह अभी भी पर्दे के पीछे से बहुत सी चीजों को नियंत्रित करते थे। उनका उत्तराधिकारी न केवल उनका दामाद बल्कि उनके पांच बेटे भी बने। इस प्रकार, वह महान शक्ति की स्थिति में था।

कैफा 18 से 36 तक अधिकारिक महायाजक था। तो, ये वे लोग हैं जो सत्ता के आदी हैं। हमारे अन्य सभी यहूदी स्रोतों के अनुसार, वे नरिदयी थे।

कभी-कभी वे लोगों को डंडों से पीटते थे। मृत सागर स्क्रॉल में उन्हें नापसंद किया गया था। फरीसियों ने उन्हें नापसंद किया।

और जोसेफस ने हर तरह की बुरी बातें बताईं कि कैसे इनमें से कुछ महायाजक लोगों का शोषण कर रहे थे। ल्यूक उच्च पुजारियों के लिए बहुवचन का उपयोग कर सकते हैं क्योंकि इस अवधि में कुलीन पुजारी, उच्च पुजारी परिवार, सभी को पुराने नियम के मुख्य पुजारी रोश हाकोहेन के विपरीत, इस अवधि के मुहावरे में उच्च पुजारी कहा जाता था। आपके पास सब कुछ था, जोसेफस इस तरह से एक पूरे महायाजक परिवार की बात करता है।

खैर, हम यहां पदानुक्रम के अधिकार के बजाय ईश्वर के अधिकार को भी देखते हैं। वे यहां पदानुक्रम को चुनौती देते हैं। और जब उन्हें मंदिर में उपदेश देने के लिए दोषी ठहराया जाता है, और मूल रूप से क्योंकि वे सदकियों के अधिकार को चुनौती दे रहे हैं, तो वे बात कर रहे हैं, आप जानते हैं, आपने इस आदमी को क्रूस पर चढ़ाया, आपने इस आदमी को मार डाला।

ठीक है, अगर इस आदमी को देशद्रोह के लिए फाँसी दी गई थी, तो उसके पक्ष में खड़े रहना और उस पर फैसला सुनाने वालों को चुनौती देना देशद्रोह है। लेकिन प्राचीन दुनिया में इसे बहुत असभ्य माना जाता था। इसे कृतघ्नता का प्रतीक माना जाता था, जसि कुछ लोग ग्रीको-रोमन समाज में सर्वोत्कृष्ट पाप मानते थे, उपकार का बदला चुकाना, अच्छे काम का बदला बुराई से देना।

आपको उपकार का बदला कृतज्ञता के साथ, सम्मान के साथ देना चाहिए था। और पीटर यहां जसि भाषा का उपयोग करता है, वह कहता है, ठीक है, अगर हमें इस आदमी को दिए गए उपकार के कारण हिसाब देने के लिए यहां बुलाया गया है, तो ग्रीको-रोमन दुनिया में उपकार एक प्रमुख मुद्दा था। आपके पास जगह-जगह इसका जश्न मनाते हुए शिलालेख हैं, जहां दानकर्ता इमारतें बनाते थे या कभी-कभी लोगों को नागरिक सहायता प्रदान करने के लिए तैयार किया जाता था, इत्यादि।

यदि कोई परोपकारी था, तो आपको उसका सम्मान करना चाहिए था। ल्यूक अध्याय 22 उस बारे में बात करता है, जहां अन्यायियों में सबसे महान लोग परोपकारी हैं। यीशु कष्ट सहने और सेवा करने के लिए आए, लेकिन यीशु भी आए और एक यूजेटेस, एक परोपकारी के रूप में कार्य किया, जसिसे यह पता चलता है कि कैसे नासरत के यीशु, ल्यूक-एक्ट्स में, नासरत के यीशु अच्छा करते रहे, प्रेरितों 10:38, उपकार करते रहे .

खैर, अब शिष्य यीशु के नाम पर कार्य कर रहे हैं और यीशु के नाम के माध्यम से इस व्यक्तियों पर उपकार किया गया है। और इसके लिए शिष्यों पर मुकदमा चलाया जा रहा है। अब, यह आदमी, वह कहता है, यदि आप जानना चाहते हैं कि यह आदमी कैसे पूर्ण बना, तो यहां पूर्ण बनाने की भाषा बचाने के लिए वही ग्रीक शब्द है।

तो पीटर के आगे बढ़ने पर यह बहुत महत्वपूर्ण होने जा रहा है, क्योंकि जैसे ही उन्हें दोषी ठहराया जाएगा, उनसे जो मांग की जाएगी वह यह है कि आपने यह किसके नाम पर, किसके अधिकार से किया है? आप जानते हैं, आपको इन मंदिर अदालतों में बोलने, भीड़ खींचने और हमारी सत्ता को चुनौती देने का अधिकार कसिने दिया? और पतरस कहता है, यदि तुम सचमुच जानना चाहते हो, तो यह मानव-निर्मित सम्पूर्ण वस्तु किसके नाम से बनी थी? यह मनुष्य किसके नाम से अपनी बीमारी से बचाया गया था? यह उपकार किसके नाम से किया गया? यह नाजरथ के यीशु के नाम से है, जसि आपने क्रूस पर चढ़ाया था। वास्तव में, स्वर्ग के नीचे कोई अन्य नाम नहीं दिया गया है, जो पुराने नियम का एक अच्छा मुहावरा था, मानवता के बीच कोई अन्य नाम नहीं है जसिसे द्वारा किसी व्यक्तियों को बचाया जा सके, जसिसे द्वारा मोक्ष आ सके, नासरत के यीशु के नाम के अलावा। इसलिए वह शारीरिक उपचार से मोक्ष की ओर तेजी से आगे बढ़ता है, जोएल का हवाला देते हुए, प्रेरितों 2:21 के अनुसार, इजराइल और उन व्यक्तियों के लिए वादा किया गया उद्धार, जो प्रभु के नाम को पुकारेंगे और बचाए जाएंगे।

इस आदमी को बचा लिया गया. अब यदि आप बचाए जाने के लिए यीशु का नाम पुकारेंगे तो आप बचाए जा सकते हैं। इससे एक बात सामने आती है जो हमें अक्सर नए नियम में कहीं और मिलती है।

निश्चिती रूप से, आपके पास यह यूहन्ना 14:6 में है। यीशु के अलावा पति तक पहुँचने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि किसी के पास कोई अन्य सच्चाई या कुछ अन्य अच्छी चीजें नहीं हैं, लेकिन मानवता की स्थिति इतनी निराशाजनक है कि केवल यीशु के माध्यम से ही हम ईश्वर के साथ पूरी तरह मेल-मिलाप कर सकते हैं। अब, यह केवल यहीं तक सीमिति बात नहीं है।

आपने प्रेरितों के काम की पूरी कतिाब में सुसमाचार का उपदेश पढ़ा। सुसमाचार का प्रचार यह मानता है कि लोगों को यीशु की आवश्यकता है और यीशु के माध्यम से ही उन्हें बचाया जा सकता है। पॉल के पत्रों और पूरे नए नियम में आपके पास एक ही बात है।

इस वचन को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया गया है। आपको विश्वास के द्वारा उचित ठहराया जा सकता है। आप फिर से जन्म ले सकते हैं, ऊपर से जन्म ले सकते हैं, आत्मा से जन्म ले सकते हैं, पॉल कहते हैं, साथ ही जान भी।

आपको अंधकार के अधिकार के राज्य से प्रकाश के राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया। आपको मृत्यु से जीवन की ओर ले जाया गया। इसे विभिन्न तरीकों से रखा गया है, लौकिक बंधन से लेकर बुरी शक्तियों तक पहुंचाया गया है।

इस मुक्ति के सभी प्रकार के विभिन्न पहलू हैं। लेकिन हर मामले में धारणा यही है कि लोग एक राज्य से दूसरे राज्य में जाते हैं। लोग खीं गये और फिर मलि गये।

इसका मतलब यह नहीं है कि हर कोई जानता है कि वास्तव में क्या हुआ था। मेरा मतलब है, यदि आप एक ईसाई घर में पले-बढ़े हैं, तो आप जानते हैं, यह धीरे-धीरे आप पर हावी हो गया होगा। हो सकता है कि आप इसे बहुत पहले से ही स्वीकार करते आ रहे हों।

लेकिन मेरे जैसे किसी व्यक्ति के लिए जो ईसाई घर में बड़ा नहीं हुआ और बाद में परिवर्तित हो गया, यह एक बहुत ही नाटकीय और कठोर बदलाव था। मैं आपको वह तारीख बता सकता हूँ जब यह घटित हुआ और दोपहर का अनुमानित समय जब यह घटित हुआ। लेकिन किसी भी मामले में मुद्दा यह है कि यीशु ही उद्धारकर्ता है और वह ही एकमात्र उद्धारकर्ता है।

अब, यह उस संस्कृति में उतना ही अपमानजनक था जतिना आज कई लोगों के लिए है। ग्रीको-रोमन दुनिया में यह पहले से ही आकरामक था। यहूदी लोगों को विशिष्ट माना जाता था और उन्हें बहुत हीन दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि वे एकेश्वरवादी थे।

अन्य लोगों को पसंद है, आपकी समस्या क्या है? हम आपके सहित सभी देवताओं की पूजा करते हैं। हमें आपके भगवान होने से कोई दिकित नहीं है। आपको हमारे देवताओं से दिकित क्यों है? तुम्हारे साथ क्या गलत है? तुम बहुत असभ्य हो।

और इसके लिए उन्होंने कई लोगों को हेय दृष्टि से देखा, यहूदी लोगों को हेय दृष्टि से देखा। कुछ अन्य गैरयहूदियों ने कहा, ठीक है, आप जानते हैं, वे सर्वोच्च देवता की पूजा करते हैं। यह कोई बुरा वचन नहीं है।

लेकिन यह कहना कतिना अधिक विशिष्टतापूर्ण था कि ईश्वर का अनुसरण केवल यीशु के माध्यम से किया जाता है? इसके लिए एपोस्टोलिक चर्च को एक कीमत चुकानी पड़ी। और अगर हम उनके जैसा बनना चाहते हैं, तो हमें आज वह कीमत भी चुकाने को तैयार रहना होगा। ऐसी संस्कृतियों में, जो कहती हैं, अच्छा, आपके लिए यह विश्वास करना बहुत असभ्य है कि आपका ईश्वर ही एकमात्र रास्ता है।

हमें व्यक्तिगत रूप से असभ्य नहीं होना है। यह वही है जो हम मानते हैं। साथ ही, इस पर विश्वास करते हुए हमें दयालु होने की जरूरत है।

याद रखें, यीशु ने फरीसियों से कहा था, मैं धर्मियों के लिये नहीं आया हूं। यीशु ने पापियों के साथ खाना खाया। वह उन लोगों तक पहुंचे जो बाहरी थे, जो हाशिए पर थे, जो जानते थे कि वे खो गए थे, और जो उनकी जरूरतों को जानते थे।

वह उनके पास पहुंचा। और हम श्रेष्ठता की स्थिति वाले लोगों तक नहीं पहुंचते हैं, ठीक है, हम बचाए गए हैं और आप नहीं, क्योंकि हम पूरी तरह से अनुग्रह द्वारा बचाए गए थे। और यही वह है जो भगवान उनके लिए भी करने की पेशकश करते हैं।

इसलिए, जब हम लोगों तक पहुंचते हैं, तो हम उन लोगों के पास पहुंचते हैं जो टूटे हुए हैं, और जनिका भगवान ने स्वागत किया है। और हमें कुछ अद्भुत चीजें माली हैं जैसे हम अन्य लोगों के साथ साझा करना चाहते हैं क्योंकि हमें उनकी परवाह है। लेकिन मंदिर के अधिकारी ऐसा नहीं कर रहे थे... मंदिर के अधिकारी सच्चाई को दबाने की कोशिश करने के लिए सत्ता की स्थिति से काम कर रहे थे।

और उन्हें उम्मीद थी कि जब वे चुप रहने के लिए कहेंगे तो लोग कतार में खड़े हो जायेंगे और चुप हो जायेंगे। उन्हें आम तौर पर अपना रास्ता मलिन किया गया क्योंकि वे अपना रास्ता लागू कर सकते थे। उनके पास राजनीतिक शक्ति थी।

वे यह उम्मीद नहीं कर रहे थे कि पितरस और यूहन्ना उनसे बात करेंगे क्योंकि उन्हें अनपढ़ माना जाता था। इसका मतलब यह हो सकता है कि वे पढ़ नहीं सकते। वे लेख नहीं सकते।

कम से कम, इसका मतलब यह है कि उनके पास उस तरह का उच्च-सतरीय कुलीन अलंकारिक प्रशिक्षण, यूनानी शिक्षा वगैरह नहीं थी जो कई सदकयिनु पुजारियों के पास होती। परन्तु पितरस और यूहन्ना ने उन्हें साहसपूर्वक उत्तर दिये। वहाँ का यूनानी शब्द पारोसिया है।

और प्राचीन काल में बहुत से लोग किसी ऐसे व्यक्ति का सम्मान करते थे जो पारोसिया के साथ बोलता था, जो एक प्रकार की नरिभीकता, स्पष्टवादिता थी। आप लोगों की चापलूसी नहीं कर रहे थे। आप सत्ता में बैठे लोगों से सच बोल रहे थे।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम लोगों को भडकाते फरि। पॉल रोमन अधिकारियों वगैरह का बहुत सम्मान करता था। लेकिन यहां ऐसे लोग थे जो भगवान के लिए बोलने का दावा करते थे।

और वे उस उच्च अधिकार को हड़प रहे थे जो इसराएल के सचचे राजा, यीशु मसीहा का था। और इसलिए शिष्यों ने बहुत स्पष्टता से बात की। उन्हें धमकी देकर भेज दिया जाता है, जैसा आमतौर पर ऐसा करने का सही तरीका माना जाता है।

और वे अन्य शिष्यों, अन्य विश्वासियों के पास जाते हैं, जिनकी अब काफी बड़ी संख्या है। अब, पेंटेकोस्ट के दिनों के सभी धर्मांतरित लोग अभी भी वहां नहीं हैं, क्योंकि याद रखें, उनमें से कुछ प्रवासी यहूदी हैं जो संभवतः दावत के लिए आ रहे हैं। अन्य प्रवासी यहूदी हैं जो पहले से ही यरूशलेम में रहते हैं।

लेकिन यह भी याद रखें कि इस बिंदु पर आने से पहले चर्च की गवाही के माध्यम से शिष्यों की संख्या बढ़ती रही है। तो, बहुत सारे लोग एक साथ हैं। वे मंदिर में एकत्रित हो सकते हैं।

यदि यह वास्तव में संपूर्ण समूह है, तो यह एक सार्वजनिक बैठक हो सकती है। लेकिन किसी भी स्थिति में, वे वापस जाते हैं और एक स्वर से, एक स्वर से प्रार्थना में अपनी आवाज उठाते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि उन सभी ने एक साथ बलिकुल एक ही प्रार्थना की।

यह कोई धार्मिक प्रार्थना नहीं थी जैसा हर कोई जानता हो। यह इस अवसर के लिए एक सहज प्रार्थना थी, हालांकि लोग ईश्वर के स्तोत्रों के कुछ शब्दों को जानते होंगे जिन्होंने स्वरग और पृथ्वी और समुद्र को बनाया, उदाहरण के लिए, जिसका उपयोग बाद में अंधनियमों में भी किया जाता है, यहाँ तक कि अन्यायियों को उपदेश देने के लिए भी जिन्होंने ऐसा नहीं किया मुझे नहीं पता कि वह पवतिरशास्त्र से था। परन्तु जब वे वापस जा रहे हैं और वे विश्वासियों को प्रार्थना के लिए इकट्ठा करते हैं और वे इस प्रार्थना में अगुवाई करते हैं, तो वे कहते हैं कि रिषट्र प्रभु और उसके अभिषिक्त के खिलाफ इकट्ठे हुए हैं।

भजन 2, जैसा इस काल में मसीहा के रूप में समझा गया था। यह डेवडिकि लाइन को संबोधित करता है और अंततः डेवडिकि लाइन का प्रतीक है, जिसमें बहाली आएगी, जैसा इस समय वादा किया गया मसीहा समझा जाता है। मसीहा, हबिरू में मसीहा, का सीधा सा अर्थ है अभिषिक्त व्यक्ति।

पुराने नियम में बहुत से लोगों का अभिषिक्त किया गया था, लेकिन जब इस अवधि में यहूदी लोग अभिषिक्त व्यक्ति के बारे में बात करते थे, तो वे विशेष रूप से अभिषिक्त राजा के बारे में सोचते थे। मृत सागर स्कराल एक अभिषिक्त राजा और एक अभिषिक्त पुजारी की बात करता है, लेकिन अभिषिक्त राजा वही था जो अन्याय यहूदी लोग सोचते थे जब उन्होंने इस मसीहा, डेवडिकि के पुत्र के बारे में सोचा था। इसलिये, दाऊद की सन्तान, अन्याय लोग उसके वरिद्ध इकट्ठे हो गये थे, और जो अगुवे उसके वरिद्ध इकट्ठे हुए थे, उनका नाम उन्होंने पीलातुस और इन प्रधान याजकों के नाम रखा।

परन्तु प्रभु अपने शत्रुओं को लज्जित करेंगे और इसलिए वे ईश्वर की स्तुति करते हैं और वे प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उन्हें निरभीकता, पौरसिया, उसी प्रकार की निरभीकता प्रदान करते रहेंगे जो उन्हें पहले थी, और वह चंगा करने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाते रहेंगे, कि उसके पवतिर सेवक, यीशु के नाम से चनिह और चमत्कार किये जा सकें। जैसा सेवक यीशु का उसने अभी उल्लेख किया है, वह प्रेरितों के काम अध्याय तीन में पीड़ित सेवक है, जहाँ उसने वसितार से उपदेश दिया है, लेकिन हमारे पास उस भाषण का सारांश है। दूसरे शब्दों में, जब यह व्यक्ति ठीक हो गया था तब क्या हुआ था, और क्योंकि वह व्यक्ति महासभा के दरबार में था, वे वास्तव में कुछ भी नहीं कह सकते थे कि ऐसा नहीं हुआ था क्योंकि स्पष्ट रूप से ऐसा हुआ था।

हर कोई जानता था कि यह आदमी चलने में संकषम नहीं था और अब वह वास्तव में चलने, छलांग लगाने और भगवान की स्तुति करने में संकषम था। इसलिए, वे उनमें से और चीजें मांग रहे थे। इसलिए, उनके पास सार्वजनिक प्रचार के अधिक अवसर होंगे।

वे चुप नहीं रहना चाहते. वे नरिभीक बने रहना चाहते हैं और बोलना जारी रखना चाहते हैं और भगवान पर भरोसा करते हैं कविह उनके माध्यम से काम करना जारी रखेंगे। और इसलिए, भगवान प्रार्थना का उत्तर देते हैं और 431 में यह कहा गया है कविह स्थान हलि गया जहां वे इकट्ठे हुए थे।

वे सभी पवतिर आत्मा से भरे हुए थे और साहस के साथ परमेश्वर का वचन सुनाते थे। याद रखें, वशिष रूप से नहीं, बल्कि वशिष रूप से ल्यूक-एकट्स में आत्मा की शकति और प्रेरणा। आप इसे पहले से ही ल्यूक अध्याय एक में जकर्याह के साथ देख सकते हैं, जो न द बैपटसिट को उसकी माँ के गर्भ से आत्मा से भर दिया गया था, इत्यादी।

आत्मा वशिष रूप से भवषियवाणी या ईश्वर के लिए बोलने से जुड़ा था। और इसलिए वे साहस के साथ परमेश्वर का वचन बोलेंगे। वे परमेश्वर के लिए बोलना, उसका संदेश सुनाना जारी रखेंगे।

कभी-कभी यह अनय प्रकार के भवषियसूचक कार्यों जैसे चमत्कारों से भी जुड़ा होता है और कभी-कभी अनय चीजों से भी जुड़ा होता है, लेकिन वशिष रूप से भगवान के लिए बोलने में सकषम होने के साथ। भरने की भाषा भी उसी से जुड़ी हुई लगती है. आप ल्यूक अध्याय चार के बारे में नकारात्मक तरीके से सोच सकते हैं जब भीड़ गुस्से से भर गई थी और यीशु के खिलाफ काम किया था।

लेकिन यहां उनका पुनरुद्धार जारी है। आत्मा उंडेली जाती है. जगह हलि गई है.

यह बहुत रुचिपूर्ण है। हम ऐसा अकसर होने की उम्मीद नहीं करते हैं, लेकिन इतिहास में कुछ पुनरुत्थानों में कभी-कभी इसकी सूचना मिलती है। परमेश्वर इनमें से कुछ चीजें दोबारा करता है।

20वीं सदी का पुनरुद्धार हुआ, हेबराइड्स में 20वीं सदी के मध्य का पुनरुद्धार, मुख्य रूप से प्रेसबिटरियन पुनरुद्धार। और जब आरम्भ में आत्मा गरी, तो वह स्थान हलि गया। लोगों को एक से अधिक स्थानों पर मकान हलिते हुए महसूस हुए।

लेकिन किसी भी मामले में, जैसा कि आत्मा को उँडेल दिया गया था, आगामी पुनरुद्धार जो छंद 32 से 37 में वर्णित है, यह दलिचस्प है क्योंकि यह वशिष रूप से उनके द्वारा संपतता साझा करने, जरूरतमंदों को देने, जब लोग अंदर थे तब उनके पास जो कुछ भी था उसे बेचने की बात करता है। जरूरत। अधिनियम 2:44 और 45 के साथ भी यही बात है। तो यह कट्टरपंथी है।

आज कुछ लोग ऐसे हैं जो आत्मा के बारे में केवल उस शकति के संदर्भ में बात करना चाहते हैं जो आत्मा हमें चीजें प्राप्त करने के लिए देती है। लेकिन वास्तव में, अधिनियमों में, आत्मा उससे भी अधिक गहराई तक जाती है। आत्मा हमें अंदर से बदल देती है ताकि हम खुशी से भगवान की सेवा करें, इसलिए हम भगवान और एक दूसरे के प्रतासिमर्पति हैं।

इसलिए, हम एक दूसरे की जरूरतों को पूरा करना चाहते हैं। यरूशलेम में बहुत सारे बहुत गरीब लोग थे, और वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि हर किसी को खयाल रखा जाए। खेर, अध्याय 4 और श्लोक 4 में इनमें से कुछ चीजों को अधिक वसितार से देखने पर, जैसा कि पतरस प्रचार कर रहा था, यरूशलेम में विश्वासियों की संख्या 5,000 पुरुषों तक पहुंच गई।

इसमें महिलाएं और बच्चे शामिल नहीं हैं। यह ल्यूक की गलती नहीं है कि उसके पास कुल संख्या नहीं है क्योंकि उस समय लोग अक्सर पुरुषों की संख्या से ही गनि जाते थे। इसलिए, ल्यूक को वही आंकड़ा बताना होगा जो उसके पास है।

यदि पीटर और जॉन हैं, तो इस पर निर्भर करते हुए कि वे कहाँ उपदेश दे रहे हैं, हो सकता है कि वे केवल मनुष्यों के दरबार में उपदेश दे रहे हों। लेकिन सम्भावना यह है कि वे इससे आगे, इसराइल के दरबार से परे, उपदेश दे रहे हैं। वे जरूरी नहीं कि बोहरी दरबार में उपदेश दे रहे हों, बल्कि महिलाओं के दरबार में, जो आपके इसराइल के दरबार में पहुंचने से पहले है, और उससे आगे पुरोहितों का पवित्रस्थान था।

उनमें से कोई भी नहीं जा सकता था जब तक कि वे लेवी न हों। तो शायद बहुत सी स्त्रियाँ भी आसतकि हो गई थीं, और बच्चे भी आसतकि हो गए थे। 5,000 आदमी, मान लीजिए, तर्क के लिए, यह कुल मिलाकर 10,000 लोगों के समान था जो यरूशलेम में वशिवासी थे।

अब, इतिहास की अधिकांश व्यवस्थाओं में, वास्तव में चर्च में महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि पहली शताब्दी में भी ऐसा ही हुआ था, आपके साथ जो हुआ उसके बाद पुरुषों की तुलना में बहुत अधिक महिलाएं यहूदी धर्म में परिवर्तित हुईं। अब यह स्पष्ट था क्योंकि खतना पुरुषों के लिए दर्दनाक है और महिलाओं को खतना नहीं कराना पड़ता था।

लेकिन ईश्वर से डरने वालों में भी, महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक थी, आंशिक रूप से क्योंकि प्राचीन भूमध्यसागरीय समाज में, पुरुषों के पास धर्म परिवर्तन न करने के सामाजिक कारण थे। वे समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा खो देंगे, जबकि महिलाओं के लिए यह उतना बड़ा मुद्दा नहीं था। यरूशलेम में ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी।

लेकिन मान लीजिए कि यरूशलेम में लगभग 10,000 वशिवासी हैं। लोग कहते थे, यह संभव नहीं था क्योंकि देखिए, इस काल में यरूशलेम की जनसंख्या लगभग 25,000 ही थी। लेकिन पुरातत्व पर आधारित नए अनुमानों के अनुसार जनसंख्या संभवतः लगभग 85,000 के करीब है।

तो, 10,000 एक बहुत बड़ी संख्या है, लेकिन यह आधी से अधिक आबादी की तरह नहीं है। हालांकि, दिलचस्प बात यह है कि जब हम इसकी तुलना करते हैं, तो संभवतः अधिकांश फरीसी यरूशलेम में केंद्रित थे। और जोसीफस के अनुसार, उनकी संख्या को कभी भी कम नहीं आंका जा सकता था, कुल मिलाकर लगभग 6,000 फरीसी ही थे।

वहाँ केवल लगभग 4,000 एस्सेन्स थे। जहां तक मुझे याद है, वह सदकियों की गिनी नहीं करता है, लेकिन मेरा अनुमान है कि उनकी संख्या फरीसियों से अधिक नहीं होगी। वे एस्सेन्स से कम और शायद कम ही रहे होंगे।

तो पहले से ही यरूशलेम में वशिवासियों की संख्या संभवतः सदकियों की पूरी संख्या से अधिक है। कुछ लोगों ने कहा है, ठीक है, अधिनियमों की पुस्तक में ये आंकड़े यथार्थवादी नहीं हो सकते हैं। और विशेष रूप से जब आप प्रेरितों के काम 21:20 पर पहुंचते हैं, जहां यह कहा गया है कि यहूदिया में असंख्य, हजारों वशिवासी थे।

यह यरूशलेम तक ही सीमित नहीं है, यह यहूदिया में है, जो कानून के प्रति उत्साही हैं। तो, दसियों हजार यहूदी वशिवासी, यानी कम से कम 20,000 और शायद उससे भी अधिक। कुछ लोगों ने कहा है कि यह संभव नहीं है क्योंकि वे गणना करते हैं, ठीक है, आप जानते हैं कि यदि

कॉन्सटेंटाइन के समय तक विकास स्थिर था, तो आप यरूशलेम में पहले से ही इतने सारे लोगों के साथ शुरुआत नहीं कर सकते थे जो आसक्तिके थे।

लेकिन कौन कहता है कि विकास स्थिर था? यदि आप इतिहास में विभिन्न पुनरुद्धार आंदोलनों को देखें, तो अक्सर प्रारंभिक पुनरुद्धार में बड़े पैमाने पर प्रसार होता है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, यहाँ एक पुनरुद्धार हुआ, दूसरा महान् जागृता, जिससे संयुक्त राज्य अमेरिका में मेथोडिस्ट चर्च को बहुत लाभ हुआ। उस आंदोलन के दौरान, जब से फ्रांसिस अंबेरी यहां पहुंचे, वहां पहले से ही कुछ मेथोडिस्ट थे, लेकिन जब से वह इंग्लैंड से यहां पहुंचे और अपनी मृत्यु के समय तक प्रचार करना शुरू किया, मेथोडिस्ट चर्च लगभग 1,000 गुना बढ़ गया।

लगभग उसी अवधि में बैप्टिस्ट सैकड़ों गुना बढ़ गए। और आप कुछ अन्य स्थानों में कुछ पुनरुत्थानों को देखें, इंडोनेशिया में न्यास पुनरुद्धार, उस अवधि में चर्च की भारी वृद्धि। मेरा मानना है कि यह 100 गुना से भी अधिक था।

आप 1906 से शुरू होकर, 20वीं सदी की शुरुआत में पेंटेकोस्टल पुनरुद्धार को देखें। अब, वहाँ अन्य लोग भी थे, आप जानते हैं, यहाँ तक कि कुछ लोग अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते थे, लेकिन उससे पहले अन्य लोग भी थे जो पेंटेकोस्टल जैसे थे, और बहुत से लोग अन्य आंदोलनों, पवित्रता आंदोलन, इत्यादि से इस आंदोलन में आए। लेकिन 1906 से शुरू होकर, जहाँ आंदोलन वास्तव में शुरू हुआ, हम कह सकते हैं, वास्तव में बहुत तेजी से फैल गया, 2006 तक, ऐसे अनुमान हैं, खैर, इन अनुमानों में केवल सांप्रदायिक पेंटेकोस्टल शामिल नहीं हैं।

उनमें वे लोग भी शामिल हैं जिनकी पहचान करिमाई के रूप में की जाती है, और इसके कुछ कारण हैं, ठीक है, ऐसे कारण हैं कि लोग अलग-अलग अनुमान क्यों दे रहे हैं। लेकिन हम एक सदी में आधा अरब लोगों के बारे में बात कर सकते हैं, या अगर यह सिर्फ शासत्रीय संप्रदाय के पेंटेकोस्टल हैं, तो कम से कम कुछ सौ मिलियन लोग। अब, यह अभूतपूर्व वृद्धि है।

पुनरुद्धार आंदोलन अक्सर बड़े पैमाने पर विकास के साथ शुरू होते हैं, और इसलिए, इस प्रकार के आंकड़ों पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है जो हमारे पास अधिनियमों की पुस्तक में है जब आप आज समाजशासत्रीय समानताओं की तुलना करते हैं। किसी भी स्थिति में, अध्याय 4 और श्लोक 6 में, अन्नास को महायाजक कहा गया है, भले ही उस समय आधिकारिक तौर पर कैफा थे, ल्यूक अध्याय 4 में दोनों को महायाजक के रूप में नामित किया गया है। अध्याय 3 और श्लोक 2 में, क्योंकि फिर से, उच्च इस काल में पुजारी का प्रयोग बहुवचन में किया जा सकता था। लेकिन वे दोनों उच्च पुरोहिता परिवार के सदस्य थे।

उन दोनों ने बहुत अधिक शक्ति का प्रयोग किया और अन्य स्रोतों ने उन्हें नकारात्मक रूप से देखा। मैंने मोक्ष के लिए ग्रीक शब्द सोडजो और सोटेरिया,

सजातीय संज्ञा के उपयोग के इस मुद्दे पर बात की। पीटर ने यहां अध्याय 4 और श्लोक 11, भजन 118, श्लोक 22 में भी उद्धरण दिया है, जैसा यीशु ने लूक अध्याय 20 और श्लोक 17 में भी उद्धृत किया था।

असली आधारशिला जिस पर भगवान का असली मंदिर बनने जा रहा है, वह मंदिर की स्थापना नहीं है, बल्कि वह पत्थर है जैसा बिल्डरों, नाज़रेथ के यीशु ने खुद अस्वीकार कर दिया था। दलिचस्प बात यह है कि जिस स्थान पर उन्हें अस्वीकार किया गया था, उनके सूली पर चढ़ने का स्थान भी एक पत्थर की खदान के पास बनाया गया था। तो, वस्तुतः वहाँ बहुत सारे अस्वीकृत पत्थर भी थे।

पदानुक्रम के बजाय ईश्वर के अधिकार के संदर्भ में, जब वे अपने चुनौती देने वालों से साहस के साथ बात करते हैं, तो दार्शनिक अक्सर लोगों के बजाय ईश्वर की आज्ञा मानने पर जोर देते हैं। सुकरात इसके लिए जाने जाते थे। और इसलिए वास्तव में जब पीटर अध्याय 5 में फरि से ऐसा कुछ कहता है तो जिस भाषा का उपयोग किया जाता है वह सुकरात के काफी करीब है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि पीटर और जॉन को यह पता रहा होगा। हालाँकि ग्रीक शक्ति तक अधिक पहुंच रखने वाले सूदकियों ने शायद उस भ्रम को पहचान लिया होगा जिसका इरादा पीटर का नहीं था। लेकिन साथ ही, इस प्रकार की नरिभीकता पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा प्रतरूपि की गई है।

नाथन, हे राजा, आप ही मनुष्य हैं। या एलियाह, जो अहाब और इस प्रकार इजेबेल का सामना करता है। या यरिमयाह, उन्होंने राजाओं का सामना किया।

उन्होंने अधिकारियों का सामना किया। ऊरियाह ने ऐसा किया और उसे शहादत का सामना करना पड़ा, यरिमयाह अध्याय 26। उत्पीड़न के बावजूद परमेश्वर की स्तुति करना।

याद रखें कि यीशु ने लूका अध्याय 6, लूका के पहले खंड में क्या कहा था। जब वे तुम्हें सताते हैं, जब वे तुम्हें झूठे भविष्यदवक्ता कहते हैं, तब आनन्दति होते हो, आनन्द से उछल पड़ते हो, क्योंकि यह वैसा ही है जैसा उनके पूर्वजों ने उन भविष्यदवक्ताओं के साथ किया था जो तुमसे पहले थे। पौलुस भी इसी प्रकार आनन्दति होता है।

पॉल और सीलास, जब प्रेरितों के काम अध्याय 16 और पद 25 में उन्हें पीटा जाता है, तो वे आधी रात को परमेश्वर की स्तुति कर रहे होते हैं जैसा कि भजन 119 में बताया गया है। वे आधी रात को भगवान की स्तुति कर रहे हैं और अन्य कैदी उन्हें सुन रहे हैं। और जब वे परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं, तो क्या होता है? खैर, यहाँ अध्याय 4 में, वह स्थान हलि गया है जहाँ वे इकट्ठे हुए थे।

वहाँ अध्याय 16 श्लोक 26 में भी स्थान हलि गया है। उनमें सचमुच भूकंप आ जाता है और उनके बंधन खुल जाते हैं। 4:24 में, वे भजन 146, श्लोक 6 को प्रतधिवनति कर रहे होंगे। ईश्वर जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ भी है, बनाया।

श्लोक 25 और 26, जैसा कि हमने बताया, भजन 2, श्लोक 1 और 2 को प्रतधिवनति करता है, जहाँ अभिक्रित मसीहा पर लागू होता है। और श्लोक 28 में, भगवान, आपने इसे पहले से ही नरिधारति कर दिया है। पुराने नियम की तरह, परमेश्वर अपनी योजना को क्रियान्वति करने के लिए दुष्टों का भी उपयोग कर सकता है।

क्रॉस उसकी योजना थी. शासकों का इरादा बुराई के लिए था, लेकिन परमेश्वर का इरादा भलाई के लिए था, यूसुफ के लिए भाषा का उपयोग करना। या आप सोचिए कि कैसे यशायाह अध्याय 10 में, अशशूर इसराइल के उत्तरी राज्य को अनुशासति करने के लिए भगवान के क्रोध की छड़ी थी।

परन्तु जब परमेश्वर ने उनके अहंकार के कारण उनका उपयोग करना समाप्त कर दिया, यह सोचकर कि वे इसे अपने आप कर रहे थे, तो परमेश्वर उनका भी न्याय करने वाला था। परमेश्वर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी योजना के हिससे के रूप में दुष्टों का भी उपयोग कर सकता है, भले ही यह उनका इरादा नहीं है। ईश्वर के पास... आप ईश्वर की संप्रभुता को देखें, और इसे देखने के विभिन्न तरीके हैं।

इसे समझने का मेरा तरीका यह है कि ईश्वर इतना संप्रभु है कि वह लोगों को कुछ हद तक स्वतंत्र विकल्प की अनुमति देकर भी अपनी इच्छा पूरी करने में सक्षम है ताकि लोग अपने कर्षत्र के भीतर जो कुछ भी करते हैं उसकी जम्मेदारी उनके पास हो। परन्तु परमेश्वर फिर भी उन अंतिम उद्देश्यों को पूरा करता है। वह पहले से जानता है कि वे क्या करने जा रहे हैं और साथ मिलकर काम करता है।

परमेश्वर कतिना संप्रभु और शक्तिशाली है। एक बट्टि पर, मैंने इस विषय पर नोट्स लेने के लिए पूरी बाइबिल पर काम किया, और मैं विशेष रूप से भगवान की संप्रभुता पर जोर देने से आश्चर्यचकित था क्योंकि यही वह हिससा है जिसका हमें सबसे अधिक सामना करने की आवश्यकता है क्योंकि यही वह हिससा है जिससे हम, आप जानते हैं, हमारे सामान्य दैनिक जीवन को ध्यान में नहीं रखा जाता है। परन्तु परमेश्वर की इच्छा के बिना हमारे सरि का एक बाल भी अलग नहीं होता।

लोग हमारे साथ बुरा कर सकते हैं, लेकिन अंततः परमेश्वर के उद्देश्य उसके चर्च के लिए और हम में से प्रत्येक के लिए अनंत काल तक प्रबल रहेंगे। साहस के लिए प्रार्थना. पुराने नियम में कुछ लोगों को, जब उन पर अत्याचार किया गया, तो उन्होंने प्रतिसोध के लिए प्रार्थना की।

2 इतिहास 24, भजन 137, और यरिमयाह 15. लेकिन यहां प्रार्थना साहस और संकेतों के लिए है, जैसा कि श्लोक 9 में भगवान ने साहस प्रदान किया था। याद रखें, ल्यूक 11:13 में, यीशु ने वादा किया था कि भगवान मांगने वालों को पवतिर आत्मा देगा।

खैर, यहाँ वे पूछते हैं। यह आता है। पवतिर आत्मा साहस देता है.

और श्लोक 33 में, यह कहा गया है कि प्रेरति शक्ति के साथ गवाही देना जारी रखते हैं। संभवतः; जिस तरह से भाषा का उपयोग किया जाता है, उसका मतलब है कि संकेत होते रहेंगे। और फिर इस अध्याय के शेष भाग में, हमारे पास वरिधाभासी उदाहरण हैं।

हमारे पास जोसेफ बरनबास है, जिसने एक खेत बेचा। इसका मतलब यह नहीं है, आप जानते हैं, लोगों ने अनविर्य रूप से अपनी सैडल, अपने लबादे और इस तरह की चीजें छोड़ दीं। परन्तु उस ने एक खेत बेच दिया, और धन प्रेरति को दे दिया।

प्रेरति के पास ग्रीबों को दिए जाने वाले उपहारों की नगिरानी थी। यदि आपके पास नरीक्षण करने वाला कोई है तो यह अधिक कुशल है। तो लोग इस काम में अपना योगदान दे रहे थे.

वे जानते थे कि प्रेरति भरोसेमंद, ईमानदार लोग, यीशु की शकिषा का पालन करने वाले और यीशु की शकिषा के अनुसार जीवन जीने वाले लोग थे। इसलिए, यीशु ने गरीबों की देखभाल के बारे में बहुत कुछ सखिया था। इसलिए, नेता पैसा बांटने में सक्षम है।

यह अध्याय 6 में एक मुद्दा बनने जा रहा है जब वे उस बटु पर पहुंच जाएंगे जहां वे इसे अच्छी तरह से नहीं कर सकते हैं और उन्हें प्रतिनिधि बनाना होगा। लेकिन किसी भी मामले में, जोसेफ यहां एक अच्छा उदाहरण है। यूसुफ को लोग बरनबास कहते हैं।

उपनाम आम थे, जोसेफ एक सामान्य नाम था। यह नरिदृष्टि करने के लिए कथिह जोसेफ कौन है, आपको इसके साथ एक और नाम की आवश्यकता है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, यह जोसेफ बरसबास नहीं है, जो संभवतः सब्त के दनि पैदा हुआ था। इसीलिए उसे सब्त का पुत्र बरसबास कहा जाता है। लेकिन यहां हमारे पास जोसेफ बरनबास हैं।

और वह साइप्रस का एक लेवी है। साइप्रस में एक महत्वपूर्ण यहूदी समुदाय था। और अध्याय 11 और श्लोक 20 में, हम पढ़ने जा रहे हैं कि साइप्रस और साइरैनियन यहूदियों ने अन्यजातियों को संदेश फैलाना शुरू किया।

ठीक है, आप जानते हैं, उन्हें यरूशलेम से खोजा गया था। बरनबास उनमें से एक हो सकता है जो सबसे पहले इस संदेश को अन्यजातियों तक फैला रहा था, भले ही ल्यूक पॉल पर अधिक ध्यान केंद्रित करने जा रहा है, शायद इसलिए क्योंकि पॉल उसका मुख्य स्रोत भी है। लेकिन यह भी, कि जोसेफ बरनबास एक साधन संपन्न व्यक्ति था, हम उस बात से पता लगा सकते हैं जो ल्यूक हमें नहीं बताता है।

क्योंकि मारक उसका चचेरा भाई या उसका रशितेदार था, हम कुलुससियों के अध्याय 4 में पढ़ते हैं। इसलिए, जब हम प्रेरतियों के काम अध्याय 12, श्लोक 12 और 13 में जॉन मारक की मां के घर के बारे में पढ़ते हैं, तो उसके पास एक नौकर है। उसका एक बाहरी द्वार है। शायद इसका मतलब है कि वह ऊपरी शहर में रहती है।

उसका काफी अच्छा घर है। तो, जोसेफ एक प्रवासी यहूदी है। मूल रूप से, वह प्रवासी भारतीयों से है, लेकिन वह ऐसा व्यक्ति है जिसके पास साधन हैं और वह यरूशलेम में बस गया है।

लेकिन इसकी तुलना एक अन्य उदाहरण से की जाती है। 4:36 और 37 में, सकारात्मक उदाहरण जोसेफ बरनबास है। लेकिन 5:1 से 11 में, हमारे पास एक नकारात्मक उदाहरण है।

और वह उदाहरण हनन्याह और सफीरा का उदाहरण है। हम उनके बारे में बाइबिल के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते हैं, लेकिन हम इतना जानते हैं कि सफीरा एक ऐसा नाम था जिसका मतलब सुंदर होता था। यह विशेष रूप से पुरोहित वर्ग के बीच आम था।

इसलिए, पुरुष आम तौर पर धन के मामले में सामाजिक रूप से उनसे ऊपर शादी नहीं करते थे। कभी-कभी वे ऐसा करते थे, लेकिन आमतौर पर नहीं। तो संभवतः वे काफी संपन्न थे।

अध्याय 5 श्लोक 1 से 11 हमें उन लोगों का नकारात्मक उदाहरण देता है जिन्होंने कहा कि वे पूरी तरह से प्रतब्धि थे, जिन्होंने कहा कि वे इस पुनरुद्धार का हिससा थे, लेकिन यह केवल सतह पर था। ये सिर्फ दिखावा था। पुनरुत्थान के समय में, जब लोग खुद को भगवान के प्रति समर्पित कर रहे हैं, तो आप इसका दिखावा नहीं करना चाहेंगे।

आप वास्तविक चीज का हिससा बनना चाहते हैं। इसलिए, प्रेरितों को शिविर में पाप को संबोधित करना होगा, और यहाँ हमारे पास नयाय का मुद्दा है। और यहाँ की ग्रीक भाषा में कुछ यहोशु अध्याय 7 के ग्रीक अनुवाद की प्रतब्धि है, जहाँ हम यहूदा के गोत्र के आकान के बारे में पढ़ते हैं, जसिने जेरिको की लूट का कुछ हिससा अपने लिए रख लिया था।

उन्हें अपने लिए नहीं रखा जाना था। ये पवतिर चीजें हेरेम के लिए अलग रखी गई थीं। वे वनिश के प्रति समर्पित थे।

उन्हें नष्ट किया जाना था क्योंकि वे जेरिको के पाप से इतने दूषित थे। और इसे अपने पास रखकर उसने पूरे समुदाय पर फैसला सुनाया। आज हम कभी-कभी पाप को बहुत गंभीरता से नहीं लेते हैं।

उदाहरण के लिए, 1 कुरनिथियों अध्याय 11 में, यह श्लोक 30 के आसपास है। पॉल कहता है, यही कारण है कि तुम्हारे बीच बहुत से कमजोर और बीमार हैं, और कुछ मर गए हैं, क्योंकि वे मसीह के शरीर को ठीक से नहीं पहचान रहे थे। और ऐसा लगता है कि इसने उनके बीच उपचार के उपहारों के मुक्त प्रवाह को रोक दिया है।

और पॉल, आप जानते हैं, यही एकमात्र कारण नहीं है कि लोग बीमार पड़ सकते हैं और मर सकते हैं। लेकिन समुदाय के बीच में पाप था। कभी-कभी पुराने नयिम के अनुच्छेद उसे जड़ से उखाड़ने, उस पाप को जड़ से उखाड़ने की बात करते हैं।

1 कुरनिथियों 5 किसी पापी को फाँसी देने के लिए, समुदाय के बीच से बुराई को जड़ से उखाड़ने के लिए व्यवस्थाविरण की भाषा का उपयोग करता है। क्योंकि चर्च स्पष्ट रूप से लोगों को फाँसी नहीं देता है, बल्कि किसी ऐसे व्यक्ति को चर्च से बाहर निकालने के लिए करता है जो बहुत ही सार्वजनिक और ज्ञात पाप कर रहा है। ऐसे में इस पुनरुद्धार के बीच यह एक नज्दी पाप भी था।

खैर, यह सार्वजनिक था, लेकिन यह कोई पाप नहीं था। कार्रवाई सार्वजनिक थी, लेकिन लोगों को पता नहीं चला। लेकिन आज हम पाप को हमेशा गंभीरता से नहीं लेते हैं।

और हम समुदाय पर भगवान का आशीर्वाद चाहते हैं। अधिनियम 5, छंद 1 से 4 तक, मृत सागर सकराल, मृत सागर सकराल में, सदस्यों को परीक्षण अवधि के बाद अपनी संपत्ति सौंपने की आवश्यकता होती है। पाइथागोरस, जो एक ग्रीक दार्शनिक संप्रदाय है, को भी सदस्यों को परीक्षण की अवधि के बाद अपनी संपत्ति सौंपने की आवश्यकता होती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे वास्तव में समुदाय में शामिल होना चाहते हैं।

हालाँकि, आरंभिक ईसाइयों के पास कोई नयिम नहीं था। इसलिए पतरस ने उन से कहा, क्या यह तुम्हारा अपना न था? आपने यह स्वेच्छा से किया। इसलिए, आरंभिक ईसाइयों के पास कोई नयिम नहीं था।

आपको अपना सारा पैसा हमें देना होगा। आपको अपनी संपत्ति हमें देनी होगी। यह प्यार की वजह से था।

और यहां नरिणय अधिकि गंभीर है, इसलिए नहीं क उन्होंने कया नहीं दया, बलक पिरतबिद्धता के उनके दखिावे के कारण। लयूक के सुसमाचार में पाखंडी बहुत अच्छे नहीं लगते थे। और इससे कोई फरक नहीं पड़ता क पाखंडी फरीसियों के संप्रदाय से है या पाखंडी ईसाई होने का दावा करता है।

भगवान को पाखंडी लोग पसंद नहीं हैं। इससे सुसमाचार के प्रसार को ठेस पहुँचती है। खैर, डेड सी स्क्राल्स ने ऐसे अपराधी को एक साल के लिए सांप्रदायिक भोजन से बाहर कर दिया।

और अंततः यदुवि दूसरी बार पकड़े गए, तो उन्हें समुदाय से स्थायी रूप से बाहर कर दिया जाएगा। आम तौर पर, चर्च ने यही किया होगा। लेकिन इस मामले में, वे मारे गये हैं।

ठीक वैसे ही जैसे हारून के दोनों पुत्रों ने पवतिर अग्नि से खेला, और आग निकली और उन्हें मार डाला। कभी-कभी जब लोग पवतिर चीजों को अपवतिर मान लेते हैं तो परमेश्वर नरिणय देता है। जब परमेश्वर आत्मा को उण्डेल रहा हो तो पुनरुत्थान पवतिर होता है।

और हम इसे नकली नहीं बनाना चाहते। हम उस समय के दौरान आत्मा के कार्य के प्रति समर्पति होना चाहते हैं। और हम इसके लिए भगवान को धन्यवाद देते हैं।

लेकिन पुनरुद्धार की भी एक कीमत होती है। और पवतिरता वह चीज है जो पुनरुद्धार के समय में महत्वपूर्ण है। हम यह भी देखते हैं क चमत्कार बढ़ते हैं।

उन्होंने नरिभीकृता के लिए प्रार्थना की थी। उन्होंने प्रार्थना की क भगवान ठीक करते रहें। और ऐसा होता है।

इसके बाद लोग हलके समुदाय में शामिल होने से डर रहे हैं। इसका मतलब यह नहीं क लोग आसतकि बनने से डरते थे। लेकिन वे आसतकि बनने और चर्च में शामिल होने से डर रहे थे जब उन्होंने सुना क अनन्या और सफ़ीरा के साथ क्या हुआ, अगर वे वास्तव में खुद को मसीह के प्रति समर्पति नहीं करने जा रहे थे।

इसमें कहा गया है क इससे लोगों में डर पैदा हो गया। वैसे ही जैसे पुराने नियम में किसी को फाँसी दी गई थी। इसका उद्देश्य लोगों को दोबारा यह पाप करने से डराना था।

अब, न्याय के इस कार्य से परे चमत्कार बढ़ जाते हैं। अधिकांश चमत्कार उपचारात्मक होते हैं। लोग बीमारी को सड़कों पर लाते हैं ताक जब पत्रस वहाँ से गुजर रहा हो, शायद मन्दरि में प्रार्थना करने जा रहा हो, तो उसकी छाया भी उन्हें छू ले।

लोगों को लगा कि पिछाई उस शख्स से जुड़ी हुई है। इसीलिए कई यहूदी लोग सोचते थे कि यदि आपकी छाया किसी शव को छूती है या आपकी छाया किसी कब्र को छूती है, तो आप अशुद्ध हो जाते हैं। और इसलिए, लोग यही सोच रहे थे।

परन्तु पतरस के द्वारा आत्मा की शक्ति इतनी प्रबल थी कि लोग इसके द्वारा प्रभावित हो रहे थे। 2 राजा 13 को याद करें, मेरा मानना है कि यह वहीं है, जहां एलीशा एक बीमारी से बीमार था जिससे उसकी मृत्यु हो गई। और फिर भी वह ईश्वर की शक्ति से इतना भरा हुआ था कि जब उन्होंने उसकी हड्डियों के ऊपर एक शव डाला, तो वह शव जीवित हो गया।

ल्यूक अध्याय 8 में यीशु को याद करें, एक महिला आगे बढ़ती है और उसके कपड़ों को छूती है। और वह कहता है, मुझे लगा कि मेरे अंदर से शक्ति बाहर चली गई है। परेरतों के काम अध्याय 19 में, पॉल से कपड़े ले लिए गए, और लोगों को उन कपड़ों के माध्यम से चमत्कार कि ढंग से ठीक किया गया और राक्षसों को इस तरह से बाहर निकाला गया।

हम ऐसा हर समय घटित होते हुए नहीं देखते। अक्सर ऐसा होता है, आप जानते हैं, वे पॉल की तरह कह रहे हैं कि किसी को विश्वास है कि उसे ठीक किया जा सकता है और वह कहता है कि यीशु के नाम पर ठीक हो जाओ इत्यादि। लेकिन कभी-कभी परमेश्वर की आत्मा इतनी नाटकीय ढंग से उड़ेली जाती थी कि वह तीव्रता के इस स्तर पर भी हमारे पास होती है।

अब, इससे जो समस्या आई वह यह है कि जब आपके पास चमत्कार होते हैं, तो बहुत से लोगों का ध्यान आकर्षित होने की अधिक संभावना होती है। यह बहुत अच्छा है। इसका मतलब है कि बहुत से लोग भगवान की ओर मुड़ेंगे।

लेकिन इसका मतलब यह भी है कि जो लोग भगवान की ओर नहीं जा रहे हैं, वे आपकी उपेक्षा भी नहीं कर सकते। और इसलिए, अगले पाठ में, हम देखेंगे कि वे सदूकियों के साथ फिर से परेशानी में पड़ जाते हैं।

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शक्ति में डॉ. करेग की नजर है। यह अधिनियम अध्याय तीन से पांच पर सत्र 8 है।